International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 04-12-2021, Accepted: 20-12-2021, Published: 05-01-2022
Volume 8; Issue 1; 2022; Page No. 5-7

कर्नाटक के प्रमुख दार्शनिक संत श्री मध्वाचार्य

के आर शशिकला राव
भाषा विभाग प्रमुख, ट्रांसेंड कॉलेज येलचेनहल्ली, बेंगलूरू, कर्नाटक, भारत

सारांश
हरिदास (शाब्दिक अर्थ भगवान हरि का सेवक) आंदोलन 13 वीं शताब्दी के आसपास कर्नाटक में उत्पन्न हुआ और भारत के अन्य हिस्सों जैसे महाराष्ट्र, बंगाल आदि में फैल गया। यह आंदोलन अगली 6 शताब्दियों में काफी बढ़ गया और हरिदास ने जीवन में बहुत योगदान दिया, संगीत, कला और साहित्य। कई सदियों से। विजयनगर साम्राज्य के दौरान आंदोलन को एक महान गति मिली और सचमुच सैकड़ों संतों / मनीषियों / दार्शनिकों ने कलियुग में जनता के लिए मुक्ति के सबसे इष्टतम मार्ग के रूप में भगवान हरि को भक्ति (भक्ति) के संदेश को फैलाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। वैदिक शास्त्रों और भाष्यों को पारंपरिक रूप से संस्कृत में संप्रेषित किया जाता था और जैसे–जैसे संस्कृत का प्रभाव कम होता गया, वैसे–वैसे वैदिक सिद्धांतों का प्रसार हुआ।
उडुपी के श्री मध्वाचार्य को अक्सर उनकी रचना द्वादश स्तोत्र के लिए मूल हरिदास के रूप में पहचाना जाता है।

मूलशब्द: प्रमुख दार्शनिक संत, संगीत, कला और साहित्य, सैकड़ों संतों / मनीषियों / दार्शनिका

प्रस्तावना

श्री मध्वाचार्य (1200 ई. दृ 1279 ई.)

मध्वाचार्य दार्शनिकों की त्रिमूर्ति (शंकराचार्य रामानुजाचार्य माध्वाचार्य) में से तीसरे थे जिन्होंने वेदों और पुराणों के युगों के बाद भारतीय विचारों को प्रभावित किया। वे श्री शंकराचार्य और श्री रामानुजाचार्य के बाद आए। उन्होंने द्वैत या द्वैतवाद के दर्शनशास्त्र को प्रतिपादित किया।

मध्वाचार्य का प्रारंभिक जीवन

श्री मध्वाचार्य का जन्म उडुपी के पास एक छोटे से स्थान पाजका में नारायण भट्ट और वेदवती के घर हुआ था। उनका जन्म 1200 में विजयदशमी के शुभ दिन पर हुआ था और उनका नाम वासुदेव रखा गया था।
मध्वाचार्य को पारंपरिक रूप से हनुमान और भीम के बाद वायु का तीसरा प्रमुख अवतार माना जाता है। वे बहुत मजबूत और महायोगी थे।
वे अत्यधिक बुद्धिमान थे और अपने गुरुकुल में अन्य सभी छात्रों से बहुत आगे थे। अपने शिक्षक को बहुत ही प्रभावित करते थे । वे हमेशा आध्यात्मिक पथ की ओर आकर्षित थे और आठ साल की उम्र में संन्यास लेना चाहते थे। चूंकि उनके माता–पिता तैयार नहीं थे, इसलिए उन्होंने कुछ समय के लिए टाल दिया।
बाद में वह अपने माता–पिता को समझाने में कामयाब रहे और अद्वैत दर्शनशास्त्रशास्त्र के एक महान शिक्षक अच्युतप्रेक्ष ने उन्हें संन्यास की दीक्षा दी। दीक्षा के समय, उन्हें 'पूर्णप्रज्ञा' नाम दिया गया था। अच्युतप्रेक्ष ने ही उन्हें श्पूर्णप्रज्ञश की उपाधि दी थी, जिससे वे अधिक प्रसिद्ध हुए।
पूर्णप्रज्ञाचार्य ने अपने स्वयं के दर्शनशास्त्र का प्रचार करना शुरू किया, जिसके अनुसार दुनिया वास्तविक है, व्यक्तिगत आत्माएं ब्रह्म से, अलग हैं, और विष्णु ब्रह्मांड में सर्वोच्च हैं। मध्वाचार्य ने द्वैतवाद और यथार्थवाद की वकालत की। उनका दर्शनशास्त्र पंचभेदों या पांच प्रकार के भेदों (मतभेदों) को स्वीकार करता है जो वास्तविक और स्थायी हैं। वे हैंरू ईश्वर या भगवान जीव या आत्माओं से अलग है; वह जड़ से भी भिन्न है (जीव–जीव भेद, जीव–जड़ भेद, जीव–ईश्वर भेद, जड़ ईश्वर भेद, जड़–जड़ भेद); विभिन्न जीव एक दूसरे से भिन्न हैंय जीव जड़ से भिन्न हैंय विभिन्न वस्तुएं जो जड़ हैं, वे भी एक दूसरे से भिन्न हैं। वह भगवान को, जिन्हें नारायण या विष्णु या श्रीहरि कहा जाता है, सर्वोच्च वास्तविकता के रूप में और अन्य को आश्रित वास्तविकताओं के रूप में स्वीकार करता है। मुक्ति, जो किसी के आनंदमय स्वभाव को पुनः प्राप्त कर रही है, केवल भक्ति या भगवान की भक्ति के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है।
दर्शनशास्त्र के अन्य विद्यालयों के कई विद्वानों ने मध्वाचार्य के साथ बहस की लेकिन उनके द्वारा हार गए और अपने विचारों में परिवर्तित हो गए। अपनी आस्था का प्रचार करने के लिए, उन्होंने दक्षिण भारत के विभिन्न मंदिरों की तीर्थयात्रा की और इस अवसर का उपयोग वेदांत के मूल ग्रंथों पर अपने विचारों को फैलाने के लिए भी किया। तीर्थयात्रा से लौटने के तुरंत बाद, उन्होंने भगवद गीता पर भाष्य लिखा। गीता भाष्य (गीता पर भाष्य आचार्य की पहली कृति है।)
मध्वाचार्य ने बाद में उत्तर भारत की तीर्थयात्रा की, जब उनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने बद्रीक्षेत्र के प्रसिद्ध स्थान का दौरा किया था। ऐसा लगता है कि उन्होंने इसी स्थान पर ब्रह्मसूत्र भाष्य की रचना की थी। ऐसा कहा जाता है कि यहां से वह अकेले ही हिमालय की गहराई में ऊपरी बदरी के दुर्गम क्षेत्रों में गए, वेदव्यास से मिले, जो अपने शिष्यों के साथ वहां रहते थे, जो मानवता के सामान्य भाग के लिए अदृश्य थे और ब्रह्मसूत्रों के सही अर्थ के बारे में उनके निर्देश प्राप्त किए। महाभारत और पंचरात्र आगम भी, जिनकी रचना उनके द्वारा नारायण की महिमा को स्थापित करने के लिए की गई थी।
दक्षिण भारत लौटने से पहले उन्होंने ब्रह्मसूत्रों पर अपनी टिप्पणी लिखी। अपनी वापसी की यात्रा पर उन्होंने दो प्रख्यात पंडितों के साथ बहस की। शोभना भट्टा और समशास्त्री अद्वैत से संबंधित हैं। वे दोनों सन्यास लेकर उनके शिष्य बन गए। शोभना भट्ट प्रसिद्ध पद्मनाभतीर्थ बन गए और समशास्त्री नरहरि तीर्थ बन गए। बाद में उन्होंने मध्वाचार्य के कार्यों पर टीकाएँ लिखीं। यह इस समय था कि अच्युतप्रेक्ष (उनके गुरु) भी इस महान शिष्य के शिष्य बने।
उडुपी लौटने के बाद, मध्वाचार्य ने दर्शनशास्त्र की नई प्रणाली की स्थापना करते हुए विभिन्न कार्यों को लिखना शुरू किया, जिसे

द्वैत सिद्धांत कहा जाने लगा।
आचार्य ने उडुपी में प्रसिद्ध श्रीकृष्ण मंदिर की स्थापना की और आठ मठों की स्थापना की। उन्होंने श्री कृष्ण की छवि की खोज की थी जो मिट्टी के एक विशाल ढेर (गोपीचंदन कहा जाता है) में निहित थी। उसे धोने के बाद वह खुद उसे अपने मठ में ले गए। इस जुलूस के दौरान ही उन्होंने दैवीय प्रेरणा से, अब प्रसिद्ध द्वादशस्तोत्र, भगवान कृष्ण पर बारह स्तुतियों की रचना की।
इन स्तुतियों के अनुसार, यह मूर्ति दिव्य वास्तुकार और मूर्तिकार विश्वकर्मा द्वारा तैयार की गई थी और इसकी पूजा वृंदावन की गोपियों के साथ–साथ रानी रुक्मिणी ने भी की थी। मंदिर में भगवान कृष्ण की पूजा सुचारू रूप से चलने के लिए, उन्होंने मंदिर के चारों ओर इन आठ मठों या मठों की स्थापना की और अपने आठ संन्यासी शिष्यों को बारी–बारी से देखभाल करने की जिम्मेदारी दी। ''अष्टमठ'' के रूप में जाने जाने वाले इन आठ मठों में अदमारू मठ, काणियुरू मठ, कृष्णपुरा मठ, पलिमारू मठ, पेजावरा मठ, पुत्तीगे मठ, शीरूरु मठ और सोदे मठ हैं।
उडुपी में अपने प्रवास की अवधि के दौरान, उन्होंने बलि संस्कारों के तरीकों में सुधार किया, असली जानवरों के बजाय काले चने के पाउडर और घी के पेस्ट से बने पशु रूपों का उपयोग शुरू किया और उन्हें भक्ति विषयों में शामिल किया।
उत्तर भारत के अपने दूसरे दौरे के दौरान, मध्वाचार्य ने दिल्ली में जलालुद्दीन खिलजी से मुलाकात की और कहा जाता है कि उन्होंने उनसे उर्दू में बातचीत की। इसके अलावा बदरी की अपनी दूसरी तीर्थयात्रा के दौरान उन्होंने विभिन्न प्रकार के कई चमत्कार किए जैसे गंगा नदी के पानी पर चलना आदि।

द्वैत की स्थापना में मध्वाचार्य की भूमिका

इस अवधि के दौरान, श्री शंकराचार्य की अद्वैत विचारधारा भारतीय विचारों और शिक्षाओं पर हावी थी। यह कुछ सदियों से अस्तित्व में था और अधिकांश धार्मिक संस्थानों और गुरुकुलों ने इस दर्शनशास्त्र का पालन किया। लेकिन मध्वाचार्य शास्त्रों की अद्वैतवादी व्याख्याओं से कभी संतुष्ट नहीं हुए। बचपन से ही वे हमेशा उन्हें चुनौती देना चाहता थे।
उनकी ज्ञान और बुद्धि ऐसी थी कि उन्होंने अन्य धर्मों के कई विद्वानों को पराजित किया। जिन विद्वानों को उन्होंने पराजित किया उनमें से कुछ उनके शिष्य बन गए।

मध्वाचार्य की टिप्पणियाँ और अन्य कार्य

मध्वाचार्य ने भगवद गीता और ब्रह्म सूत्र सहित कई महत्वपूर्ण हिंदू पवित्र ग्रंथों पर टिप्पणियां लिखीं। इन भाष्यों ने उन्हीं कार्यों की शानदार द्वैतवादी व्याख्याएँ दीं जिन्हें श्री शंकराचार्य ने अद्वैत (अद्वैतवाद) पर जोर देने के रूप में देखा था।
उन्होंने विभिन्न ग्रंथ लिखे जो उनके दर्शनशास्त्र को विस्तृत करते थे जिसे उन्होंने तत्ववाद कहा, या जैसा कि यह अधिक लोकप्रिय रूप से जाना जाता है, द्वैत। उनकी कुछ रचनाएँ गीता भाष्य, ब्रह्म सूत्र भाष्य, अनुभाष्य, कर्म निर्णय, दशप्रकरण, अनुव्याख्यान, न्याय विवरण, उपनिषद भाष्य, महाभारत तात्पर्य निर्णय, भागवत तात्पर्य, यमक भारत और विष्णु तत्त्व निर्णय थीं।
श्री मध्वाचार्य ने सभी सैंतीस कार्यों में लिखा है, जिनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ किया जा सकता है। सभी उपनिषदों पर भाष्य, भगवद्गीताभास्य, ब्रह्मसूत्रभाष्य, द्वादशस्त्रोत्र और बहुत कुछ। उनकी विद्वता की गहराई विभिन्न धार्मिक ग्रंथों के उद्धरणों की श्रेणी और विविधता में देखी जाती है। वे अलंकारप्रयोग के प्रयोग से मुक्त हैं और वे अपने सभी तर्कों में अपने तथ्य के लिए जाने जाते हैं। उनका अंत भी लगभग चमत्कारी था। उडुपि के अनंतेश्वर मंदिर में मध्वाचार्य जी ऐतरेय उपनिषद के पाठ को करते समय पुष्प वृष्टि हुई मध्वाचार्य जी ने सोचा कि इस अवतार की समाप्ति हुई और इसलिए अपने शिष्यों को आशीर्वाद देकर सीधे बद्री क्षेत्र निकल पड़ेद्य आज भी बद्री क्षेत्र में वे विद्यमान है और उडुपि क्षेत्र में अदृश्य रूप से आज भी वे स्थित है।

उडुपी में मध्वाचार्य का योगदान

श्री मध्वाचार्य का जन्म उडुपी क्षेत्र में हुआ था और उनकी शिक्षा अनंतेश्वर मंदिर से जुड़े मठ में हुई थी। उडुपी अब सुंदर कृष्ण मंदिर के लिए प्रसिद्ध है और यह मध्वाचार्य ही थे जिन्होंने इस मंदिर की स्थापना की थी। उन्हें वह कृष्ण की मूर्ति कैसे मिली, इसकी एक दिलचस्प कहानी है।
एक दिन, मध्वाचार्य समुद्र के किनारे अपने दैनिक अनुष्ठान कर रहे थे, जब उन्होंने एक जहाज को संकट में देखा। उसने जहाज को सुरक्षित रूप से बंदरगाह के लिए निर्देशित कियाद्य जहाज के कप्तान ने उन्हें धन्यवाद दिया और उनसे अनुरोध किया कि वे जहाज से जो कुछ भी चाहते है उसे ले लें।
श्री मध्वाचार्य ने गोपी चंदन की तीन बड़ी गांठों को चुना क्योंकि वे सहज रूप से जानते थे कि इनमें से एक टीले में, शिशु कृष्ण की एक सुंदर मूर्ति थी।
उन्होंने मूर्ति को पाया और इसे एक मंदिर में प्रतिष्ठित किया और व्यक्तिगत रूप से 20 वर्षों तक इसकी पूजा की। यह मंदिर अब भारत के सबसे प्रसिद्ध कृष्ण मंदिरों में से एक है। उन्होंने मंदिर के चारों ओर स्थापित आठ मठों के पुजारी बनने के लिए आठ युवा संन्यासियों को चुना।
इन आठ मठों को दो–दो महीने के नियमित आवर्तन में मंदिर के प्रशासन का काम सौंपा गया था। इस प्रणाली, जिसे पर्याया के नाम से जाना जाता है, को 16 वीं शताब्दी में श्री वदिराजा द्वारा दो–दो साल तक बढ़ाने के लिए संशोधित किया गया था। प्रशासन की यह प्रणाली अब तक जारी है।

मध्वाचार्य के दर्शनशास्त्र

द्वैत दर्शनशास्त्र का मूल सिद्धांत श्री शंकराचार्य के मायावाद का खंडन है। द्वैत इस बात पर जोर देता है कि संसार वास्तविक है न कि केवल एक भ्रम।
श्री मध्वाचार्य की कुछ शिक्षाएँ इन पंक्तियों के साथ आती हैं।

- आत्मा अज्ञान से इस दुनिया से बंधी है।
- आत्मा के लिए इस बंधन से मुक्त होने का तरीका श्री हरि की कृपा प्राप्त करना है।
- श्री हरि तक पहुंचने के लिए भक्ति करनी पड़ती है, और कोई रास्ता नहीं है।
- भक्ति का अभ्यास करने के लिए, ध्यान करने की आवश्यकता है।
- ध्यान करने के लिए, मन को साफ करने और पवित्र ग्रंथों का अध्ययन करके वैराग्य प्राप्त करने की आवश्यकता हैद्य
- पवित्र ग्रंथों को समझना गुरु की कृपा से ही संभव हो सकता है।

मध्वाचार्य एक सामाजिक और धार्मिक सुधारक थे जिन्होंने घोषणा की कि मोक्ष का मार्ग सभी के लिए खुला है और जन्म से सीमित नहीं है। उनकी शिक्षाओं ने कई अनुयायियों को आकर्षित किया और कर्नाटक में भागवत या भक्ति परंपराओं को पुनर्जीवित किया। हालाँकि, उन्होंने यह नहीं माना कि श्ईश्वर और मानव आत्माश के दोहरे सिद्धांत और दर्शनशास्त्र समान हैं। उन्होंने अद्वैतवाद की अवधारणा पर अपने गुरु के साथ अक्सर बहस की। फिर उन्होंने सोचा कि वह एक नया रास्ता खोजेंगे जो समाज के लिए आदर्श हो। इसलिए उन्होंने मठ छोड़ दिया और भगवान की मुख्य अवधारणा पर द्वैत आंदोलन शुरू किया। बाद में यह आंदोलन भक्ति आंदोलन में एक मजबूत और प्रशंसनीय दर्शनशास्त्र बन गया।

मध्वाचार्य ने द्वैत दर्शनशास्त्र की स्थापना की

उन्होंने वेदांत के एक द्वैत विद्यालय की स्थापना की और दर्शनशास्त्र को श्तत्त्ववादश कहा। मध्वाचार्य ने हिंदू दर्शनशास्त्र का गहन अध्ययन किया और अपने विचारों को विभिन्न पहलुओं के साथ लिखा। उन्होंने भगवद गीता, उपनिषदों और ब्रह्म सूत्रों का भी गहराई से अध्ययन किया। संस्कृत भाषा में लिखी गई इन पवित्र पुस्तकों पर उनका विश्लेषण 37 पुस्तकों के रूप में है। ये ग्रंथ अनुव्याख्यान के नाम से प्रसिद्ध हैं, जिनकी रचना काव्यात्मक रूप में हुई थी। उनके भक्त उन्हें मानते हैं, वे वेद व्यास के अवतार थे।

भक्ति आंदोलन पर प्रभाव

उनके विचार आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत से भिन्न थे। रामानुजाचार्य का दर्शनशास्त्र भी मध्वाचार्य की अवधारणाओं से भिन्न है। द्वैत वेदांत के दर्शनशास्त्र को विकसित करने के लिए मध्वाचार्य ने कई बार भारत की यात्रा की। अपनी यात्रा के दौरान, उन्होंने दार्शनिकों के साथ बहस करने के लिए हिंदू पवित्र स्थानों और हिंदू शिक्षण केंद्रों का दौरा किया। 1285 ई. में उन्होंने भगवान कृष्ण की मूर्ति के साथ उडुपी में कृष्ण मठ की स्थापना की। उन्होंने भक्ति आंदोलन को विशिष्टाद्वैत की अवधारणा से प्रभावित किया। उनका द्वैत वेदांत, आदि शंकराचार्य और रामानुज के दर्शनशास्त्र के अन्य दो दर्शनशास्त्र के रूप में दृढ़ता से प्रभावित दर्शनशास्त्र में से एक है। उनके शिष्यों जयतीर्थ, वादीराज तीर्थ, राघवेंद्र तीर्थ और व्यासतीर्थ ने द्वैत वेदांत के दर्शनशास्त्र का प्रसार किया है।

मध्वाचार्य ने उडुपी अष्ठ मठ की स्थापना की

उन्होंने उडुपी में विभिन्न स्थानों पर मठों की स्थापना की और उडुपी अष्ठ मठों के रूप में प्रसिद्ध हुए। अन्य 24 मठ भी पूरे भारत में स्थापित हुए। मंदिर के यति मध्वाचार्य द्वारा शुरू की गई पर्याय प्रणाली सीखते हैं। यति संन्यास प्रणाली का पालन करते हैं और उपदेशों को द्वैत दर्शनशास्त्र के सिद्धांत देते हैं। आश्रम के मुख्य पुजारी मध्वाचार्य दर्शनशास्त्र की परंपरा के अनुसार प्रतिदिन कृष्ण प्रार्थना करते हैं। सभी मठ उन परंपराओं और रीति–रिवाजों का पालन करते हैं, जिन्हें तंत्रसार में मध्वाचार्य ने लिखा था।
मठों में, बिना किसी भेदभाव के सभी आगंतुकों, तीर्थयात्रियों और भूखे लोगों को भोजन परोसते हैं।
उनके सभी साहित्यिक कार्यों ने द्वैत दर्शनशास्त्र के अनुयायियों को निर्देशित किया और 1279 ईस्वी में कहा जाता है कि उडुपी के अनंतेश्वर मंदिर में जब श्री मध्वाचार्य जी ऐतरेय उपनिषद पाठ कर रहे थे तब उस मंगल अवसर पर पुष्प वृष्टि हुई और सब शिष्यों को उन्होंने उपदेश कर वहां से अदृश्य हो गएद्य वहां से बद्री क्षेत्र चले गएद्य आज भी माना जाता है कि वे अदृश्य रूप से उडुपी में रहते है और दृश्य रूप से बद्री क्षेत्र में श्री वेदव्यास के साथ रहते हैं।

संदर्भ सूची

1. श्री मध्वविजयः प्रमेय नवमालिका–श्री नारायण पंडिताचार्य द्वारा कृत, पहला संस्करण डॉ बन्नंजे गोविन्दाचार्य, ईशावास्यं प्रतिष्ठान, उडुपी, 2013
2. सर्वमूल सौरभ–डॉ व्यासनकेरे प्रभंजनाचार्य द्वारा कृत, ऐतरेय प्रकाशन–दूसरा संस्करण, 2013
3. श्री पूर्णप्रज्ञ दर्शन–डॉ व्यासनकेरे प्रभंजनाचार्य द्वारा कृत, ऐतरेय प्रकाशन–दूसरा संस्करण, 2013
4. श्री वादीराजा तीर्थ विरचित तीर्थ प्रबंध–व्यासमध्व संशोधन प्रतिष्ठान– ऐतरेय प्रकाशन–पहला संस्करण, बेंगलुरु, 2019
5. हनुमा–भीम–मध्व–श्रीमानकारी श्रीनिवासाचार्य द्वारा कृत, श्री राघवेंद्र स्वामी मठ, मन्त्रालयम, आंध्र प्रदेश–प्रकाशन, 2004